हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हां | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	5	0	6	0	7	3

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविंद

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 130

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है उत्तरों को थोड़ा और बेहतर बनाने का प्रयत्न करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) यूनीकोड और हिन्दी

वर्तमान युग में किसी भी भाषा के अस्तित्व को वैज्ञानिक विकासों से एक प्रकार की चुनौती मिल रही है। कम्प्यूटरीकरण में अंग्रेजी से इतर भाषाओं को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को ढालने की इस चुनौती का सामना करना पड़ा है। जहाँ चीनी (मंदारिन), जापानी और रूसी भाषाओं ने इसमें महत्वपूर्ण प्रगति की है, वहीं आरंभिक वर्षों में हिन्दी का प्रयास सराहनीय नहीं था।

टाइप और एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर में अंग्रेजी के सम्मुख हिन्दी पिछड़ी हुई थी। यूनीकोड के प्रचलन से, बिट-क्षमता बढ़ने से सम्भव हुआ कि उन्हीं अक्षरों से हिन्दी की टाइपिंग भी की जा सकती है क्योंकि ज्यादा बिट-क्षमता ने ज्यादा भाषाओं के स्वरों-व्यंजनों को समाहित कर लिया है।

अब कम्प्यूटर टाइपिंग, वर्ड-प्रोग्राम और पत्रे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तक कि सोशल - मीडिया प्लेटफार्म पर भी हिन्दी का प्रचलन बढ़ा है। अब हिन्दी की उपस्थिति इंटरनेट पर भी लगातार बढ़ रही है।

यूनीकोड के इस महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए भी हमें आगे लिपि के मानकीकरण और सिस्टम सॉफ्टवेयर में भी हिन्दी की प्रगति को सुनिश्चित करना होगा।

———X———

बेहतर (आगे)

4/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रायः हिंदी को पत्रकारिता और साहित्य के अतिरिक्त आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की अन्य विधाओं में सीमित रूप में प्रयोग किया गया है। हिंदी-क्षेत्र के भी विद्वानों ने अर्थशास्त्र, विज्ञान (भौतिकी, रसायन आदि) और यहाँ तक कि सामाजिक-विज्ञान के क्षेत्र में भी अंग्रेजी को वरीयता दी।

इस लिहाज से जयंत विष्णु नार्लीकर का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने विज्ञान की जटिल और गूढ़ बातों को सरल और सम्प्रेषणीय भाषा में हिंदी पाठकों के समक्ष रखा। इनका अधिकांश लेखन बच्चों और प्रारम्भिक कक्षा के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर लिखा गया है और अंतरिक्ष-विज्ञान से सम्बंधित है। ब्रह्माण्ड की कुछ झलकियाँ, अनंत ब्रह्माण्ड जैसी कृतियों में इस प्रयास को देखा जा सकता है।

जयंत विष्णु नार्लीकर ने हिंदी में यह लेखन अपने वैज्ञानिक शोधों के साथ-साथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सम्पन्न किया है, इस लिहाज से इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। ऐसे प्रयासों को और भी बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है।

5/10

—— x ——

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न तो व्यक्तिगत स्तर पर प्रारंभ हुए थे परन्तु इनका इतना व्यापक प्रचार-प्रसार न हो सका। सी-डैक, पुणे के प्रयासों से लिपि के अनुकूल टाइप-फांटों के विकास में मदद मिली।

वर्ड और प्रोसेसिंग के बढ़ते प्रयोग के मध्य यूनीकोड ने भी हिन्दी को कम्प्यूटर के अनुकूल ढालने में विशेष मदद की। हिन्दी के प्रयोक्ता वर्ग में विशाल बाजार की संभावनाएँ छिपी हैं, इसे समझते हुए माइक्रोसाफ्ट ने हिन्दी फॉण्ट और गूगल ने गूगल ट्रांसलेटर के साथ-साथ गूगल ट्रांसलिटरेशन जैसी सुविधाओं का विकास किया।

हिन्दी की लिपि के संदर्भ में इन आरंभिक प्रयत्नों का ही परिणाम है कि आज हिंदी मोबाइल और कम्प्यूटर में आसानी से प्रयोग की जा सकती है।

गहराई लाएँ
10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

हिन्दी भाषा में लिंग, वचन, वाच्य, पुरुष और काल जैसे विकारी तत्वों के प्रभाव से कुछ पद प्रभावित होते हैं और कुछ अप्रभावित हो जाते हैं। प्रभावित होने का अर्थ है कि लिंग, वचन, वाच्य, पुरुष और काल के प्रभाव से, प्रयोग करते समय कुछ पद परिवर्तित हो जाते हैं।

विकारी पद - संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण

जैसे - काला (विशेषण) से काली (लिंग के अनुसार)
काले (वचन —)

अविकारी पद - क्रियाविशेषण
समुच्चयबोधक या योजक
सम्बंध बोधक पद
विस्मयादि बोधक पद

जैसे - तेज दौड़ना में तेज क्रियाविशेषण है और यह परिवर्तित रहता है। या, तथा, और

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे योजक पद भी प्रवर्तित रहते हैं।
विकारी और अविकारी पदों की पद व्यवस्था कुछ-कुछ संस्कृत से मिलती-जुलती है।

5/10

और बेहतर

———x———

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

मानक हिन्दी की वाक्य - संरचना का तात्पर्य है - वाक्य में प्रयोग होने वाले पदों का विन्यास क्रम। अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कर्म जैसे पदों का प्रयोग किस क्रम में किया जाएगा।

सरल वाक्यों में वाक्य संरचना का क्रम निम्नवत है। - मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

कर्त्ता - कर्म - क्रिया।

कर्त्ता - कर्म - क्रिया की यही संरचना संस्कृत में भी पाई जाती है जबकि अंग्रेजी में I read a book

कर्त्ता - क्रिया - कर्म की संरचना पाई जाती है। विशेषण और क्रियाविशेषण का प्रयोग विशेष्य से पूर्व ही किया जाता है।

जैसे - तेज दौड़ना

खूब अच्छा आदि।

इस प्रकार हिंदी की वाक्य - संरचना को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद-संरचना, विकारी तत्व और कारक-व्यवस्था के समान ही वैज्ञानिकता का अभिलक्षण माना जाता है।

5/10

—— x ——

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space.)

2. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

देवनागरी लिपि को मानक और वैज्ञानिक लिपि के रूप में मान्यता प्राप्त है। परन्तु अधिकांश रूप में गुणयुक्त होने के साथ-साथ इस लिपि में कुछ दोष भी है। इनका वर्णन निम्नवत है -

(1) देवनागरी लिपि में स्वरों और व्यंजनों की अत्यधिक संख्या। कई बार तो यह संख्या 50 तक पहुँच जाती है।

(2) मात्राओं की अवैज्ञानिक व्यवस्था। कुछ मात्राएँ पहले तो कुछ बाद में, कुछ ऊपर तो कुछ नीचे लगती है।

(3) संयुक्ताक्षर व अर्द्ध-व्यंजनों के नियम। जैसे क्त और क्ष, त्र, में भेदभाव युक्त प्रयोग।

(4) शिरोरेखा का प्रयोग लिखने में अत्यधिक समय लेता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) टाइपिंग में इन अर्द्ध-व्यंजनों व मात्राओं के अवैज्ञानिक प्रयोग से रोमन-लिपि के प्रयोग को अनायास ही बढ़ावा मिल रहा है।

(6) 'र' का प्रयोग अवैज्ञानिक रूप से भिन्न-भिन्न किया जाता है। जैसे - प्र, पृ, र्म आदि।

(7) ऐसे व्यंजनों का व स्वरों का वर्णमाला में प्रयोग होना, जिनका वास्तविक उच्चारण अब शेष नहीं है। जैसे - ष, क्ष, त्र आदि।

(8) अनुस्वार व अनुनासिक के नियमों का अस्पष्ट होना।

यद्यपि अन्य दोष भी गिनाए जा सकते हैं परन्तु वैज्ञानिकता और व्यापक प्रयोक्ता वर्ग जैसे गुण प्रायः इन दोषों को ढक लेते हैं। ऐसे में आवश्यक है कि हम निरंतर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयासों से इन दोषों को दूर करने की दिशा में अग्रसर होते रहें। उदाहरण के लिए हलन्त् के प्रयोग से टाइप-फाण्टों की संख्या को अत्यधिक कम किया जा सकता है। वर्तमान-युग में रोमन-लिपि की चुनौती का सामना करने के लिए देवनागरी लिपि के इन दोषों को दूर करते हुए उसे कम्प्यूटर के अधिक अनुकूल, और अधिक प्रयोग-सुलभ बनाना होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

(i) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में लक्षित करने योग्य बात यह है कि इसमें स्त्रीलिंग और पुल्लिंग - दो ही लिंग पाए जाते है। संस्कृत में प्रयोग किए जाने वाले नपुंसकलिंग को हिन्दी में सुविधानुसार स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में विभेदित कर प्रयोग किया जाता है।

(ii) शब्दों का लिंग - निश्चित सामाजिक दृष्टि के साथ-साथ प्रचलन पर भी निर्भर करता है। उदाहरण के लिए आत्मा, वायु, शक्ति जैसे संस्कृत पुल्लिंग शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग के रूप में प्रयोग किए जाते है।

(iii) लिंग-व्यवस्था का अन्य महत्त्व यह भी है कि लिंग-प्रयोग के अनुसार ही क्रिया और विशेषण जैसे विकारी पदों में परिवर्तन होता है।

जैसे - राम पढ़ता है।
सीता पढ़ती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राम अच्छा लड़का है।

सीता अच्छी लड़की है।

(iv) हिन्दी - समाज के पितृसत्तात्मक स्वरूप के कारण हिन्दी भाषा को भी लिंग - विभेदकारी स्वरूप प्रदाय में मिला है। अपशब्दों के प्रयोग में यह अंतर विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

(v) हिन्दी की लिंग व्यवस्था व्याकरण के नियमों से अधिक सामाजिक प्रयोगों से निर्धारित होती है। इसीलिए लिंग - व्यवस्था के प्रयोग में पूर्वी - पश्चिमी भेद पाए जाते हैं।

8/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्विवेदी युग में भाषा के मानकीकरण के प्रयासों में कामताप्रसाद गुरु और किशोरीदास वाजपेयी के व्याकरणों का विशेष महत्त्व है। अपने व्याकरण 'हिन्दी शब्दानुशासन' में वाजपेयीजीने संस्कृत या अंग्रेजी की तुलना की बजाय हिन्दी के अपने स्वभाव की खोज पर बल दिया है।

इस लिहाज से वे संस्कृत - प्राकृत - अपभ्रंश -हिंदी की विकास परम्परा के साथ- -साथ ~~यह~~ यह भी लक्षित करते हैं कि भाषा से भाषा का विकास नहीं होता अपितु लोकभाषा से भाषा का विकास होता है।

इसी क्रम में वे जनभाषा और साहित्यिक भाषा का अंतर भी ध्यान में रखने की सलाह देते हैं। जैसे - 'पालि' को वे तत्कालीन जनभाषा का साहित्यिक रूप मानते हैं और 'साहित्यिक प्राकृत'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को एक कृत्रिम भाषा (गाँऊ-गाँऊ भाषा)

इस प्रकार वे खड़ीबोली के वास्तविक चरित्र को समझने पर ज़ोर देते हैं और संस्कृत-व्याकरण को आधार बनाने से बचते हैं। 'शब्दानुशासन' शब्द से भी उनका तात्पर्य है कि भाषा का प्रयोग पहले है और 'व्याकरण' उसका अनुवर्ती।

इस प्रकार किशोरीदास वाजपेयी अपने व्याकरण 'हिन्दी शब्दानुशासन' के माध्यम से अधिक वैज्ञानिक और अधिक लोकधर्मी व्याकरण की प्रस्तुति करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान में देवनागरी लिपि हिन्दी के साथ-साथ मराठी और नेपाली के लिए भी प्रयुक्त की जाती है। इस रूप में देवनागरी लिपि में अखिल भारतीय लिपि बनने की संभावना विद्यमान है और इसका आधार है - देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता की निम्न विशेषताएँ हैं-

(i) इस लिपि में व्यंजनों का उच्चारणानुसार वैज्ञानिक विभाजन किया गया है और वे उसी क्रम में व्यवस्थित हैं।
जैसे- कण्ठ, तालु, मूर्धा, ओष्ठ्य, दन्तोष्ठ्य या स्पर्श, अंतस्थ, ऊष्म आदि।

(ii) स्वरों और व्यंजनों का अलग-अलग स्पष्ट विभाजन।

(iii) इस लिपि में एक वर्ण से एक ही ध्वनि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परिलक्षित है और प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग-अलग वर्ण। जैसे 'उ' का उच्चारण हमेशा 'उ' ही होगा जबकि अंग्रेजी में 'v' और 'oo' का उच्चारण भी 'उ' हो सकता है।

(iii) मात्रा-व्यवस्था से स्वरों को सांकेतिक रूप में लिखने में मदद मिलती है। जैसे अमरइकआ - अमेरिका।

(iv) उच्चारण और वर्ण में उपरोक्त समन्वय होने से पढ़ने और लिखने में समानता आती है, अलग-अलग भेद नहीं होता।

(v) शिरोरेखा के प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है कि कौन सा शब्द कहाँ समाप्त हो रहा है।

(vi) देवनागरी लिपि में समावेशीकरण की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रकृति है। जैसे - मराठी 'ळ' और ऊर्दू-फारसी उच्चारण के लिए 'नुक्तों' का प्रयोग समाहित करना।

(vii) देवनागरी लिपि को सीखना भी अत्यंत सरल है। जैसे '—', । और c अर्थात खड़ी पाई, पड़ी पाई और अर्द्धवृत्त के भिन्न-भिन्न प्रयोगों से ही यह लिपि प्रयोग होती है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिक विशेषताओं को वर्तमान कम्प्यूटरीकरण की आवश्यकताओं के अनुसार ढालकर इसे और भी लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

11/20
अच्छा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी की लिंग - व्यवस्था से सम्बंधित प्रमुख समस्याएँ निम्नवत हैं:-

(i) स्त्रीलिंग और पुल्लिंग - दो लिंगों का विभाजन पर्याप्त वैज्ञानिक नहीं है। यह विभाजन सामाजिक प्रचलनों पर आधारित है इसीलिए सामान्य बोलचाल में क्षेत्रीय भेद देखते हैं।

जैसे- कीड़ा आ रहा है (पश्चिमी)
कीड़ा आ रही है (पूर्वी)
या
हवा चल रही है (पश्चिमी)
हवा चल रहा है (पूर्वी)

(ii) अन्य भाषाओं के शब्दों को भी उनके मूल स्वभाव से काटकर प्रयोग करना। जैसे संस्कृत में अग्नि, वायु व आत्मा शब्द पुल्लिंग हैं और हिन्दी में स्त्रीलिंग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(iii) नपुंसकलिंग का प्रयोग न होने से निर्जीव वस्तुओं को भाषिक प्रयोग में अपनी-अपनी सुविधानुसार स्त्रीलिंग व पुल्लिंग में बाँट लेते हैं।

(iv) हिन्दी में 'लिंग' विकारी तत्त्व है अर्थात पूरे वाक्य की संरचना इस पर निर्भर करती है। अर्थात लिंग के गलत-प्रयोग से पूरा वाक्य प्रभावित होता है।

(v) पितृसत्तात्मक समाज का प्रभाव भाषा पर पड़ना स्वाभाविक है। यही कारण है कि हिन्दी एक अत्यंत लिंग-विभेदकारी भाषा के रूप में स्थापित है। अपशब्दों के विश्लेषण से इसे समझा जा सकता है।

हिन्दी की लिंग-व्यवस्था में उपरोक्त समस्याओं को दूर कर उसकी वैज्ञानिकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और वस्तुनिष्ठता को और भी बढ़ाया जा सकता है।

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सर्वप्रथम स्रोत को लें तो स्रोत के लिहाज से हिन्दी शब्द-सम्पदा के चार प्रकार हैं- तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज।

1. तत्सम शब्द - अर्थात संस्कृत-सम शब्द। संस्कृत के शब्दों को समरूप प्रयोग में तत्सम कहते हैं जैसे- अग्नि, सुर-असुर, स्वर्ण आदि।

2. तद्भव शब्द - भाषिक प्रवाह में संस्कृत के शब्दों के परिवर्तित रूप। तद्भव का अर्थ है- संस्कृत से उत्पन्न। जैसे - काम (कर्म से), आज (अद्य से)

3. देशज शब्द - लोकप्रचलन और लोकभाषाओं से गृहीत शब्द। जैसे- रोजमर्रा के शब्द- और अपशब्द, जानवरों-पेड़ों के स्थानीय नाम

4. विदेशज शब्द- विदेशी भाषाओं से गृहीत शब्द।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ऐतिहासिक संपर्कों के कारण अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रेंच शब्दों को हिंदी शब्द संपदा में स्थान मिला है। यद्यपि कि ये शब्द हिंदी के स्वभावानुसार ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे- कारतूस, अलमारी आदि।

निर्माण की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं- रूढ़, यौगिक व योगरूढ़।

रूढ़ शब्दों से तात्पर्य है दो या अधिक व्यंजनों से मिलकर बना शब्द, जिसके अवयव स्वयं में कोई अर्थ नहीं रखते। जैसे- रोटी, कपड़ा, मकान आदि।

यौगिक शब्द वे शब्द हैं जो अपना-अपना अर्थ रखने वाले शब्दों से भी निर्मित होकर अपना निजी अर्थ रखते हैं जैसे- पीताम्बर, कलमनवीस आदि।

योगरूढ़ शब्द उपरोक्त दोनों के समन्वय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से निर्मित होते हैं और इनके उदाहरण हैं- किताबघर, रेलगाड़ी आदि।

निर्माण और स्रोत के लिहाज से हिन्दी शब्द-सम्पदा पर्याप्त विविध और समृद्ध है।

7½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रपद्यवाद

प्रगतिवाद के उपरांत, प्रतिक्रिया स्वरूप और कविता के 'स्व' की रक्षा हेतु विभिन्न काव्यांदोलन सम्मुख आए। विस्तार और प्रभाव की दृष्टि से इनमें से अधिकांश कालजीवी सिद्ध नहीं हुए।

बिहार में नलिन विलोचन शर्मा, केसरी और नरेश - इन तीन कवियों ने नकेनवाद का प्रारम्भ किया, इसे ही प्रपद्यवाद के नाम से भी जानते हैं। कविता की स्वायत्तता के साथ-साथ स्वानुभूति व व्यक्ति के महत्व जैसी विशेषताएं इस काव्यांदोलन में दृष्टव्य हैं।

4/10

बेहतर बनाएं
कृतियों के नाम लिखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तारसप्तक

1943 ई० में अज्ञेय के सम्पादकत्व में तारसप्तक के प्रकाशन को हिन्दी साहित्य में युगांतकारी घटना माना जाता है। इस संग्रह से प्रयोगवाद का प्रारम्भ माना जाता है। इसमें अज्ञेय, नेमिचन्द जैन, रामविलास शर्मा, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, गजानन माधव मुक्तिबोध, भारतभूषण अग्रवाल जैसे कवियों को सम्मिलित किया।

अज्ञेय ने 'प्रयोग' को कवि-कर्म के केंद्रीय सत्य के रूप में सामने रखा क्योंकि उनके अनुसार प्रयोग के माध्यम से सत्य और सम्प्रेषण - दोनों को जानने का प्रयास किया जाता है।

तारसप्तक के माध्यम से व्यक्ति और समाज के द्वंद्व, सृजनात्मकता की समस्या और विसंगति को सामने रखा गया।

इस संग्रह में हिन्दी के मार्क्सवादी और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गैर - मार्क्सवादी - दोनों प्रकार के मत सम्मिलित थे - इस रूप में यहीं से 'नई कविता' की पृष्ठभूमि भी देखी जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

सुमित्रानंदन पंत के पल्लव की भूमिका को छायावाद का घोषणापत्र माना जा सकता है, जिस प्रकार 'लिरिकल बैलेड्स' की भूमिका को रोमैंटिसिज्म का।

एक तरफ तो पल्लव की कविताओं के माध्यम से पंत ने खड़ीबोली पर लगने वाले आक्षेपों पर पूर्णविराम लगा दिया, वहीं अपनी भूमिका के माध्यम से उन्होंने कहा कि 'अभिव्यक्ति को अब ब्रज की छींटदार चोली नहीं ढक सकती, वह फट चुकी है, उसे क्रांतिकारी के तेवर वाला चोला चाहिए।"

इस भूमिका के माध्यम से पंत ने ब्रजभाषा, रीतिकालीन मनोवृत्ति और मध्यकालीन मानसिकता का प्रतिकार करते हुए छायावाद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के माध्यम से तत्कालीन युगीन आवश्यकता को
के अनुसार कविकर्म की भूमिका रखी।
कविता के माध्यम से भी वे कहते हैं:

"द्रुत झरो जगत के जीर्णपत्र
हे स्वस्त-ध्वस्त, हे शुष्क-शीर्ण
हिम ताप-भीत, मधुवात-भीत
तुम वीतराग जड़-पुराचीन।"

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) साकेत की उर्मिला

विष्णुप्रिया, यशोधरा, उर्मिला, विधृता आदि पात्रों के माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त ने उपेक्षित महिला पात्रों को प्रगतिशील दृष्टि से पुनः स्थापित किया। अपने महाकाव्य 'साकेत' में उर्मिला के माध्यम से उन्होंने समाज और साहित्य में उपेक्षित नारी-पात्र के त्याग और महत्त्व का प्रतिपादन किया है।

साकेत की उर्मिला त्यागशील, सहनशील और तेजस्वी नारी है, जो पति को कर्तव्य की ओर प्रेरित करती है और परिवार के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करती है। उर्मिला में गांधीवादी मूल्यों और द्विवेदीयुगीन नैतिकता की छाप दिखती है। कहते हैं कि इस कृति पर गांधी जी ने टिप्पणी भी की थी कि उर्मिला को थोड़ा कलापा कम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया होता तो ठीक था।

परंतु उर्मिला का साहस और तेजस्विता भी प्रशंस्य है। कामदेव के सम्बंध में उर्मिला कहती है -

"मुझे फूल मत मारो।
मुझे विकलता तुम्हें विफलता
ठहरो श्रम परिहारो।
बल हो तो सिन्दूर बिंदु यह
यह हरनेत्र निहारो।"

—x—

5/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

छायावादी रहस्यानुभूति के सभी चरणों और रूपों को महादेवी वर्मा के काव्य में स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा की कविताओं में जहाँ एक ओर सम्पूर्ण प्रकृति में ईश्वर का आभास है वहीं विरह भी कवि व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन गया है.

"विरह का जलजात जीवन
विरह का जलजात।"

अथवा

"मैं नीर भरी दुख की बदली
स्पन्दन में चिर निस्पंद बसा
क्रंदन में आहत विश्व हँसा।
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आधुनिक मीरा के समान वे अपने प्रियतम के विरह में व्याकुल हैं। परंतु इस विरह, व्याकुलता और रहस्य को तत्कालीन समाज में नारी की दशा, बंधन, नये ज्ञान और आकांक्षाओं के अर्थ में भी पढ़ा जा सकता है। इस प्रकार उनकी रहस्यानुभूति का एक सामाजिक पक्ष भी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything, except question number, in this space)

6. (क) हिन्दी के नवगीत आन्दोलन का परिचय देते हुए उसकी विशेषताओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयोगवाद, नई कविता और अकविता के दौर में हिन्दी कविता अधिकाधिक पाठ्य वस्तु बनती गई। वह चिंतन और बहस के केंद्र में तो आई परन्तु आम जनता और श्रोताओं से दूर होती गई। इसके पीछे महत्त्वपूर्ण तर्क यह भी दिया जा रहा था कि गीत विधा सुनने में तो कर्णप्रिय है परन्तु आधुनिक जीवन की जटिलताओं को वहन करने में सक्षम नहीं है।

इन्हीं चुनौतियों के प्रत्युत्तर में नवगीत आंदोलन प्रारम्भ किया गया। रमेश रंजक, रवीन्द्र भ्रमर, उमाकांत मालवीय, ठाकुर प्रसाद सिंह, को नवगीत के प्रमुख स्तम्भों में गिना जाता है।

नवगीत ने एक तरफ लय, तुक व गेयता जैसे तत्वों को महत्त्व दिया और दूसरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तरह विसंगति, विडम्बना और व्यर्थताबोध जैसे तत्त्वों को भी अपने कथ्य में समाहित करने का प्रयत्न किया।

जैसे- "छिड़ती न कोई आग है
जलता न कोई राग है
केवल सुलगाती है चिता
इस गीत के आकाश में।"

अथवा

"ईंट पर मन पर बदन पर
है अमावस का बसेरा
चंद लोहे की छड़ों में
बंद है युग का सवेरा।"

इस समन्वय की प्रवृत्ति से नवगीत अपनी छाप छोड़ने में तो कामयाब रहा परन्तु हिन्दी कविता की मुख्यधारा से थोड़ा पृथक ही बना रहा। शमशेर बहादुर सिंह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और दुष्यंत कुमार की प्रसिद्ध गज़लों को भी नवगीत आंदोलन के समांतर देखा जा सकता है।

——x——

11/20 Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय के यात्रा-साहित्य की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय व्यक्ति और समाज के द्वंद्व से ही सृजन की ऊर्जा प्राप्त करते हैं। अपने 'एक बूँद सहसा उछली' और 'अरे यायावर रहेगा याद' जैसी कृतियों के माध्यम से वे हिंदी साहित्य को ऐसे यात्रा-वृत्तांत उपलब्ध कराते हैं, जो अपनी प्रकृति में विशिष्ट हैं।

अज्ञेय यायावरी प्रकृति के कवि हैं और यात्रा वृत्तांत में उनके सैनिक जीवन से लेकर पूरोप-यात्रा तक के वर्णन हैं। अज्ञेय लोगों में उतना नहीं रमते जितना प्रकृति-दर्शन और अस्तित्व की समस्याओं में। उनके यहाँ प्रकृति के विचारोत्तेजक चित्र देखने को मिलते हैं।

यात्रा-वृत्तांतों में वे सृजन, अस्तित्व, व्यक्ति-समाज, संबंध जैसी समस्याओं पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही विचार करते हैं इस रूप में वे उनकी कविताओं का विस्तार प्रतीत होते हैं।

अज्ञेय के यात्रा-साहित्य की भाषा तत्सम, सुविचारित और पारदर्शी है। यात्रावृत्तांतों में उनके फोटोग्राफर गुण का भी समावेश है। क्योंकि दृश्यों को वे पूरी जीवंतता में उकेरते हैं जैसे उत्तर-पूर्व में परशुराम-कुंड और घने जंगलों के दृश्य।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ग) नई कविता में निहित लघुमानव की अवधारणा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कविता में 'लघुमानव' का अर्थ है - अपनी आशाओं-आकांक्षाओं, सुख-दुख, मद-ग्लानि-उत्साह के साथ उपस्थित साधारण व्यक्ति। 'लघुमानव के बहाने हिन्दी कविता पर एक बहस' निबंध के माध्यम से विजयदेव नारायण साही ने इस पर विचार किया है।

परन्तु कई विचारधाराओं के कवि 'नई कविता' में एक साथ सक्रिय थे। उनके लिए 'लघुमानव' के अर्थ भिन्न-भिन्न थे। जैसे सर्वेश्वर के इन शब्दों में

"जिंदगी दो अंगुलियों में दबी
सस्ती सिगरेट के टुकड़े की तरह
जिसे दो कश पीकर
नाली में फेंक देंगा।"

लघुमानव का ही जीवन अभिशप्त

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होता है तो रघुवीर सहाय का लघुमानव थोड़ा सा सिद्धांतवादी भी है-

"कुछ होगा कुछ होगा
अगर मैं बोलूँगा।
न टूटे न टूटे तिलिस्म सत्ता का।
मेरे अंदर का एक कायर टूटेगा।
टूट मेरे मन टूट
एक बार सही तरह।

इसी प्रकार मुक्तिबोध के यहाँ भी लघुमानव जनसामान्य का प्रतीक है वस्तुतः नई कविता का 'लघुमानव' जनसामान्य का पर्यायवाची है परंतु ऐसा व्यक्ति है जो अपने जीवन की विसंगति और विडम्बना को भी सचेत रूप में जानता है वह उससे निकलने की कोशिश करता है पर निकल नहीं पाता।

इसी अर्थ में नई कविता का यह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लघु मानव आज अधिक सार्थक हो उठा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation.